



उन्नत तकनीकी: आत्मनिर्भर किसान



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण
प्रसार शिक्षा निदेशालय, पूसा, बिहार

उन्नत तकनीकी: आत्मनिर्भर किसान

- प्रेरणा स्रोत** : श्री राधामोहन सिंह, माननीय सांसद, मोतिहारी एवं पूर्व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार
- मुख्य संरक्षक** : डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय, माननीय कुलपति डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर, बिहार
- मार्गदर्शक** : डॉ. अंजनी कुमार, निदेशक, अटारी (जोन-IV), पटना
डॉ. आर. के. झा, निदेशक प्रसार शिक्षा, डा.रा.प्र.के.कृ.वि.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार
डॉ. बिकास दास, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुजफ्फरपुर, बिहार
डॉ. अनूप दास, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना, बिहार
डॉ. कुंदन किशोर, अधिष्ठाता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. एस. के. पूर्वे, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-महात्मा गाँधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण, बिहार
- मुख्य संपादक** : डॉ. अरविन्द कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. आर. पी. सिंह, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज
डॉ. अनुपमा कुमारी, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र, गोपालगंज
डॉ. मोनोबुल्लाह, प्रधान वैज्ञानिक, अटारी (जोन-IV), पटना
- संपादक** : डॉ. शैलेश कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-महात्मा गाँधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण, बिहार
डॉ. धर्मवीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, अटारी (जोन-IV), पटना
डॉ. अभय कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र, परसौनी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. विजय सिंह मीणा, वरीय वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-महात्मा गाँधी समेकित कृषि अनुसंधान संस्थान, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण, बिहार
डॉ. आशीष राय, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, परसौनी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. अंशू गंगवार, विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियांत्रिकी (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, परसौनी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. गायत्री कुमारी पाद्री, विषय वस्तु विशेषज्ञ, (पौधा संरक्षण), कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण
डॉ. शीर्षत तेजस्विनी कपिल, विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियांत्रिकी (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण
श्रीमती सविता कुमारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ, (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

डॉ. रातुल मोनी राम, विषय वस्तु विशेषज्ञ, (पौधा संरक्षण), कृषि विज्ञान केन्द्र, नकरटियागंज
डॉ. उदय राम गुर्जर, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मात्स्यिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, परसौनी, पूर्वी चम्पारण
श्री मनीष कुमार, प्रक्षेत्र प्रबंधक, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

सह संपादक मंडल

: डॉ. रामबाबू शर्मा, सहायक प्राध्यापक (पौधा रोग), पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी
महाविद्यालय, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

डॉ. टी. पी. महतो, सहायक प्राध्यापक (कीट विज्ञान), पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी
महाविद्यालय, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

डॉ. हेमंत कुमार, सह-प्राध्यापक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय,
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

डॉ. प्रमोद कुमार, सहायक प्राध्यापक, पशु प्रजनन उत्कृष्टता केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

डॉ. अभिक पात्रा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन), कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज

डॉ. भूषण कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज

डॉ. अभिषेक राणा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौधा संरक्षण), कृषि विज्ञान केन्द्र, गोपालगंज

डॉ. नवीन कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, गोपालगंज

टंकण व अक्षर संयोजक

: श्री घनश्याम कुमार, सहायक, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

श्री अभिषेक कुमार, आशुलिपिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

श्री नवीन कुमार, निम्नवर्गीय लिपिक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय,
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

श्रीमती सुमन राज भारती, निम्नवर्गीय लिपिक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यान एवं वानिकी
महाविद्यालय, पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण

प्रथम संस्करण : अप्रैल, 2022

द्वितीय संस्करण : फरवरी, 2023

तृतीय संस्करण : फरवरी, 2024

चतुर्थ संस्करण : फरवरी, 2025

पंचम संस्करण : सितंबर, 2025

षष्ठम संस्करण : सितंबर, 2025

सप्तम संस्करण : फरवरी, 2026

प्रकाशक

परमार पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

854, केजी आश्रम, भुइन्गोद, गोविंदपुर रोड, धनबाद-828109, झारखंड

Email: parmarpublishers@gmail.com | Ph. No.- 9700860832, 9308398856



981-81-967211-2-0

पशुओं में बार-बार गर्भ न ठहरने की समस्या : कारण और समाधान

विपिन¹, एन.एन.पाटिल¹, अंशुमान द्विवेदी¹, अवनीश², राम पाल¹ एवं प्रज्ञा भदौरिया³
¹कृषि विज्ञान केंद्र, बेगूसराय, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
²प्रोफेशनल असिस्टेंट्स फॉर डेवलपमेंट एक्शन (प्रदान), तेघरा, बेगूसराय, बिहार
³आईसीएआर-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन IV, जगदेव पथ, पटना

परिचय

डेयरी पशुओं की उच्च प्रजनन क्षमता ही लाभकारी दुग्ध उत्पादन की आधारशिला मानी जाती है, जिसमें प्रति वर्ष एक बछड़ा प्राप्त होना आदर्श लक्ष्य है। जब गाय या भैंस नियमित रूप से मद (गर्मी) में तो आती है, लेकिन बार-बार गर्भाधान कराने के बावजूद गर्भ धारण ठहरने में असफल रहती है, तो इस स्थिति को रिपीट ब्रीडिंग कहा जाता है। यह समस्या न केवल गर्भधारण दर को प्रभावित करती है, बल्कि दुग्ध उत्पादन में कमी, शुष्क काल की अवधि में वृद्धि तथा पशुपालक को प्रत्यक्ष आर्थिक नुकसान का कारण भी बनती है। एक डेयरी गाय एवं भैंस के पालन पर प्रतिदिन होने वाला खर्च क्रमशः लगभग ₹90 एवं ₹100 आता है। यदि कोई गाय या भैंस केवल एक बार भी रिपीट होती है, तो उसका शुष्क काल कम से कम 21 दिनों तक बढ़ जाता है, जिससे किसान को अतिरिक्त आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इस अवधि में गाय पर $₹90 \times 21 = ₹1890$ तथा भैंस पर $₹100 \times 21 = ₹2100$ का अतिरिक्त खर्च आता है। इस प्रकार, एक बार रिपीट होने की स्थिति में प्रति पशु औसतन लगभग ₹2000 का आर्थिक नुकसान होता है, जो डेयरी व्यवसाय की लाभप्रदता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। केवीके, बेगूसराय द्वारा स्थानीय किसानों की रिपीट ब्रीडिंग से प्रभावित कुल 9 गायों को गोद लेकर उनके उपचार एवं प्रबंधन का कार्य किया गया। इन गायों में लंबे समय से गर्भधारण न होने की समस्या थी, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान हो रहा था। केवीके में इन पशुओं का वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन किया गया, जिसमें सबसे पहले प्रत्येक गाय की शारीरिक स्थिति एवं पोषण स्तर का मूल्यांकन किया गया। इसके उपरांत सभी गायों को संतुलित राशन प्रदान किया गया, जिससे ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन की कमी को दूर किया जा सके। इसके साथ-साथ आवश्यकतानुसार गर्भाशय संबंधी उपचार किया गया, जिसमें गर्भाशय की सफाई, संक्रमण नियंत्रण तथा प्रजनन अंगों की कार्यक्षमता सुधारने पर विशेष ध्यान दिया गया। इन उपचारों के दौरान एथनो-वेटरिनरी पद्धतियों का भी उपयोग किया गया। उचित पोषण, नियमित निगरानी तथा उपचार के सकारात्मक परिणामस्वरूप गोद ली गई 9 गायों में से 5 गायों ने सफलतापूर्वक गर्भधारण किया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि संतुलित आहार एवं उपयुक्त

गर्भाशय उपचार के माध्यम से रिपीट ब्रीडिंग की समस्या को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। यह पहल न केवल किसानों के लिए एक सफल मॉडल के रूप में उभरी, बल्कि डेयरी पशुओं की प्रजनन क्षमता सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी सिद्ध हुई।

रिपीट ब्रीडर की परिभाषा

रिपीट ब्रीडर वह मादा पशु होती है जो सामान्य एस्ट्रस (मद) चक्र दिखाती है, बाह्य रूप से स्वस्थ प्रतीत होती है और उसके जननांगों में कोई स्पष्ट दोष या असामान्य योनि स्राव नहीं होता। ऐसी गाय या भैंस कम से कम एक बार बछड़ा दे चुकी होती है, लेकिन तीन या अधिक लगातार गर्भाधान के बावजूद भी गर्भधारण नहीं कर पाती। सामान्य परीक्षणों में यह पशु लगभग निरोगी लगती है, इसलिए रिपीट ब्रीडिंग का कारण पहचानना कभी-कभी कठिन होता है। इसे पुनरावृत्त प्रजनन भी कहा जाता है।

रिपीट ब्रीडिंग के प्रमुख कारण

आनुवंशिक कारण

रिपीट ब्रीडिंग में आनुवंशिक कारण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माता-पिता के गुणसूत्र में उत्पन्न असामान्यताएँ या विभेदन के दौरान हुए दोष प्रजनन क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप अंडोत्सर्ग, निषेचन या भ्रूण का विकास सही ढंग से नहीं होता और बार-बार गर्भधारण विफल हो सकता है। इसके अलावा, नस्लीय अंतर भी रिपीट ब्रीडिंग की घटनाओं को प्रभावित करते हैं उदाहरण के लिए, भारत में जर्सी और होल्स्टीन क्रॉस ब्रीड गायों में यह समस्या अधिक प्रचलित है। इसलिए, आनुवंशिक कारणों को समझना और चयनात्मक प्रजनन द्वारा कमजोर गुणसूत्रों को रोकना रिपीट ब्रीडिंग कम करने में सहायक हो सकता है।

आयु का प्रभाव

गायों और भैंसों में प्रजनन क्षमता पर उम्र का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। आम तौर पर कम आगे की और मध्यवयीन पशुओं में प्रजनन क्षमता अधिक होती है, जबकि बूढ़ी गायों में बार-बार प्रजनन की घटनाएँ अधिक देखी जाती हैं। पहले और दूसरे प्रसव के पशु आम तौर पर अच्छी प्रजनन क्षमता दिखाते हैं, लेकिन चौथे और पांचवे प्रसव के बाद यह क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है। वृद्धावस्था में अंडाशय और हार्मोनल गतिविधि में कमी के कारण गर्भधारण कठिन हो जाता है, जिससे रिपीट ब्रीडिंग की संभावना बढ़ जाती है। इसीलिए, डेयरी प्रबंधन में आयु के अनुसार प्रजनन और गर्भाधान का ध्यान रखना आवश्यक है।

गर्भाशय संक्रमण

गर्भाशय का स्वस्थ वातावरण भ्रूण के सही विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। गर्भाशय में संक्रमण जैसे एंडोमेट्राइटिस, मे ट्राइटिसयापायोमेट्रा रिपीट ब्रीडिंग का एक प्रमुख कारण होते हैं। ये संक्रमण गर्भावस्था के प्रारंभिक चरण में भ्रण की मृत्यु का कारण बन सकते हैं

और बार-बार गर्भधारण विफलता पैदा करते हैं। मेट्राइटिस से पीड़ित लगभग 3.5–5.7% गायों में एस्ट्रस दोहराया गया। गर्भाशय संक्रमण गर्भाशय और ग्रीवा की संरचनात्मक तथा कार्यात्मक क्षमताओं को प्रभावित करता है, जिससे गर्भधारण नहीं हो पाता और रिपीट ब्रीडिंग की समस्या बढ़ती है। इसलिए प्रसवोत्तर चरण में गर्भाशय का समय पर निरीक्षण और संक्रमण का इलाज अत्यंत आवश्यक है।

जननांग पथ के दोष

गाय या भैंस का प्रजनन पथ अंडाणु के विकास, शुक्राणु परिवहन, निषेचन और भ्रण के आरोपण के लिए उपयुक्त होना चाहिए। यदि जननांग पथ में **संरचनात्मक या कार्यात्मक** दोष हों—जैसे गर्भाशय, ग्रीवा या योनि में जन्मजात असामान्यता, संकुचन, या रुकावटकृतो निषेचन में विफलता होती है और गर्भधारण नहीं हो पाता। ऐसे दोष बार-बार गर्भधारण विफलता और रिपीट ब्रीडिंग का कारण बन सकते हैं। इसलिए, गर्भाधान से पहले पशु के प्रजनन पथ का निरीक्षण करना और जन्मजात दोषों वाले पशुओं को प्रजनन से बाहर रखना आवश्यक है।

अंडाशय (ओवरी) विकार

डेयरी गायों में अंडाशय की असामान्यताएँ रिपीट ब्रीडिंग का एक महत्वपूर्ण कारण हैं। **सिस्टिक ओवरी डिजनरेशन (COD)**, विलंबित ओव्यूलेशन और एनोस्ट्रस जैसी समस्याएँ अंडाशय के सामान्य कार्य को प्रभावित करती हैं। प्रोजेस्टेरोन की कमी के कारण ल्यूटियल अपर्याप्तता भी रिपीट ब्रीडिंग सिंड्रोम को बढ़ावा देती है। इन विकारों के परिणामस्वरूप अंडा सही समय पर उत्सर्जित नहीं होता, निषेचन असफल होता है या भ्रुण का विकास नहीं हो पाता। इसलिए अंडाशयके विकारों का समय पर पता लगाना और उचित उपचार कराना प्रजनन सफलता और रिपीट ब्रीडिंग की रोकथाम के लिए अत्यंत आवश्यक है।

पोषण की कमी

गायों और भैंसों में पोषण की कमी रिपीट ब्रीडिंग का एक महत्वपूर्ण कारण है। गर्भधारण पशु के शारीरिक वजन, ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों पर निर्भर करता है। कम वजन वाले या कुपोषित जानवरों में गर्भधारण की संभावना कम होती है। विशेष रूप से सूक्ष्म खनिज जैसे तांबा, कोबाल्ट, लोहा और विटामिन I, D3, E की कमी से हार्मोनल असंतुलन और एनोस्ट्रस जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। इसलिए डेयरी प्रबंधन में संतुलित आहार, पर्याप्त ऊजा और खनिज पूर देना आवश्यक है। उचित पोषण अपनाने से अंडाशय कार्य, हार्मोन संतुलन और गर्भधारण की संभावना में सुधार होता है, जिससे रिपीट ब्रीडिंग की समस्या कम होती है।

कृत्रिम गर्भाधान की त्रुटियाँ

कृत्रिम गर्भाधान (AI) में होने वाली गलतियाँ भी रिपीट ब्रीडिंग का प्रमुख कारण बन सकती हैं। इसमें AI तकनीशियन की तैयारी, AI गन का स्वच्छता स्तर, वीर्य संग्रह, प्रसंस्करण और भंडारणमें त्रुटियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, मद चक्रकी गलत पहचान या समय पर

गर्भाधान न करना निषेचन विफलता का कारण बनता है। यदि देशी गाय सुबह गर्मी में आती है तो शाम को, और शाम को गर्मी में आने पर अगले दिन सुबह गर्भाधान नहीं किया जाए, तो गर्भधारण कम सफल होता है। संकर और विदेशी नस्लों में सही समय और दोहरा गर्भाधान (पहली AI के 12–24 घंटे बाद) करना जरूरी है। AI उपकरणों को बार–बार योनि में डालना या दूषित करना, और प्रशिक्षित तकनीशियन द्वारा न करना भी समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। इन त्रुटियों से रिपीट ब्रीडिंग की संभावना बढ़ जाती है और डेयरी उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

रिपीट ब्रीडिंग के दुष्परिणाम

रिपीट ब्रीडिंग का सबसे प्रमुख दुष्परिणाम है बार–बार गर्भाधान के बावजूद गर्भ न ठहरना, जिससे दुग्ध उत्पादन में कमी आती है और शुष्क काल लंबा हो जाता है। इससे पशु पालक को अतिरिक्त चारा, आहार और श्रम पर खर्च बढ़ता है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है। इसके अलावा, बार–बार गर्भधारण विफल होने से संतान की संख्या घटती है और भविष्य की नस्लीय सुधार योजनाओं पर भी प्रभाव पड़ता है। लगातार रिपीट ब्रीडिंग से पशु का प्रजनन क्षमता कमजोर होती है, प्रसव चक्र असामान्य हो जाते हैं और तनाव के कारण पशु का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। कुल मिलाकर, यह समस्या डेयरी उद्यम की लाभ प्रदता और स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

घरेलू एवं प्रबंधन आधारित उपाय

रिपीट ब्रीडिंग की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए घरेलू उपायों के साथ उचित प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। अधिकांश मामलों में पोषण सुधार, स्वच्छता और सही प्रबंधन अपनाने से दवाओं के बिना भी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

पोषण सुधार

रिपीट ब्रीडिंग रोकने और प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए संतुलित पोषण अत्यंत आवश्यक है। पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा, सूखा चारा और दाना दिया जाना चाहिए, साथ ही 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण और 30–40 ग्राम साधारण नमक प्रतिदिन शामिल करना चाहिए। विटामिन A, D3, E और ट्रेस मिनरल्स (तांबा, कोबाल्ट, लोहा, सेलेनियम) की पूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए। गर्भाधान से पहले पशुओं का वांछित वजन होना जरूरी है – देशी/जर्सी क्रॉस बछिया के लिए 240–275 किग्रा और HF क्रॉस बछिया के लिए 260–290 किग्रा। कम वजन, कमजोर या एनीमिक पशुओं का गर्भाधान नहीं करना चाहिए और अच्छे प्रजनन परिणाम के लिए केवल गुणवत्तापूर्ण, फफूंद–मुक्त चारा देना चाहिए। उचित पोषण से अंडाशय की गतिविधि, हार्मोन संतुलन और गर्भधारण की संभावना बेहतर होती है, जिससे रिपीट ब्रीडिंग की समस्या कम होती है।

घरेलू उपचार (पूरक उपाय)

रिपीट ब्रीडिंग के हल्के मामलों में, जहाँ गंभीर गर्भाशय संक्रमण या संरचनात्मक दोष न हो, कुछ घरेलू नुस्खे सहायक साबित हो सकते हैं। नीम की 200–250 ग्राम पत्तियाँ पानी में उबालकर ठंडा करके 3–5 दिन तक पिलाने से गर्भाशय की स्वच्छता और हल्के संक्रमण में लाभ होता है। हल्दी 10–15 ग्राम प्रतिदिन गुड़ या दानामें मिलाकर 5–7 दिन देने से सूजन और संक्रमण कम होता है। मेथी दाना 50–60 ग्राम रात में भिगोकर सुबह देने से प्रजनन अंगों की सक्रियता बढ़ती है और अजवाइन 25–30 ग्राम गुड़ के साथ 7–10 दिन देने से गर्भाशय की सफाई और संकुचन क्षमता बेहतर होती है। ये उपाय **पूरक हैं और चिकित्सकीय इलाज का विकल्प नहीं**, इसलिए यदि पशु गर्भधारण न करे या असामान्य लक्षण दिखें, तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

आयुर्वेदिक सहायक उपाय

आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ रिपीट ब्रीडिंग के मामलों में सहायक भूमिका निभा सकती हैं, विशेषकर जब समस्या हार्मोनल असंतुलन, कमजोरी या अंडाशयकी निष्क्रियता से जुड़ी हो। लेकिन इन्हें केवल पशु चिकित्सक की सलाह से ही देना चाहिए। ये उपाय धीरे-धीरे प्रभाव दिखाते हैं और इन्हें संतुलित आहार, उचित प्रबंधन और सही समय पर गर्भाधान के साथ ही अपनाना चाहिए।

बार-बार प्रजनन, बांझपन या कम मद वाले पशुओं के लिए

बार-बार प्रजनन, बांझपन या कम मद/गर्मी में न आने वाले पशुओं में प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए कुछ घरेलू उपाय सहायक साबित हो सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित विधि अपनाई जा सकती है :

1. **एलोवेरा (धीकुमारी)** की 1–2 पंखुड़ियाँ खाली पेट 3 दिनों तक खिलाएँ। यह हार्मोन संतुलन और प्रजनन अंगों की कार्यक्षमता में सुधार करता है।
2. अंकुरित चना दाल, अंकुरित बाजरा या अंकुरित गेहूं प्रतिदिन 200 ग्राम की मात्रा में 15 दिनों तक खिलाएँ। यह ऊर्जा, प्रोटीन और मिनरल्स प्रदान कर प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है।
3. जब पशु में कामोत्तेजना (एस्ट्रस) के लक्षण दिखाई दें, तो गर्भाधान या प्राकृतिक प्रजनन से पहले मौखिक रूप से 100–150 मिलीलीटर नीम का तेल पिला दें। यह गर्भाशय और प्रजनन पथ को स्वच्छ रखकर गर्भधारण में सहायक होता है।
1. अश्वगंधा चूर्ण 20–25 ग्राम प्रतिदिन गुड़ या गुनगुने पानी के साथ 15–20 दिनों तक देने से हार्मोन संतुलन और प्रजनन क्षमता में सुधार होता है।
2. शतावरी चूर्ण 20–25 ग्राम देने से मादा पशुओं के प्रजनन अंगों की कार्यक्षमता और गर्भधारण की संभावना बढ़ती है।

3. पशु को ताजा रूप में गुड़ और नमक के साथ दिन में एक बार गर्मी के पहले या दूसरे दिन निम्नलिखित क्रम में मौखिक रूप से खिलाएँ :

सफेद मूली – 5 दिनों तक प्रतिदिन 1 मूली

एलोवेरा का पत्ता – 4 दिनों तक प्रतिदिन 1 पत्ता

मोरिंगा के पत्ते – 4 दिनों तक प्रतिदिन 4 मुट्टी

सिसस (Cissus) का तना – 4 दिनों तक प्रतिदिन 4 मुट्टी

करी पत्ते और हल्दी – 4 दिनों तक प्रतिदिन 4 मुट्टी

यदि पशु गर्भधारण नहीं करता है, तो पूरे उपचार चक्र को एक बार फिर दोहराएँ।

केवीके, बेगूसराय में रिपीट ब्रीडिंग से ग्रसित गायों को संतुलित राशन में प्रतिदिन 60–70 ग्राम मोरिंगा (सहजन) पत्ती का चूर्ण को नियमित रूप से 150 दिनों तक उपयोग किया गया। इसके साथ आवश्यकतानुसार गर्भाशय संबंधी उपचार भी किया गया। इस समन्वित पोषण एवं उपचार प्रबंधन के परिणामस्वरूप रिपीट ब्रीडिंग से प्रभावित गायों में गर्भधारण दर में लगभग 50–60 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

मदचक्रन आना

1. एनेस्ट्रस अर्थात् लंबे समय तक मद न आने वाले पशुओं में प्रजनन सक्रियता बढ़ाने के लिए यह एक सरल घरेलू एवं आयुर्वेदिक उपाय अपनाया जा सकता है। इसके अंतर्गत लगभग 100 ग्राम चूर्ण, जिसमें 50 ग्राम बेल के पत्तों का चूर्ण तथा 50 ग्राम करी पत्तों का चूर्ण शामिल हो, को प्रतिदिन पशु के दाना या आहार के साथ 10 दिनों तक खिलाया जाता है। यह मिश्रण अंडाशय की सक्रियता बढ़ाने, हार्मोन संतुलन सुधारने और मद चक्र को पुनः प्रारंभ करने में सहायक माना जाता है। बेहतर प्रभाव के लिए बेल और करी पत्तियाँ अक्टूबर से फरवरी के बीच एकत्रित कर छाया में सुखाकर चूर्ण बनानी चाहिए।
2. जायफल के अंदर मौजूद बीज को निकालकर उसका चूर्ण बनाया जाता है और उसे एक पके हुए केले के अंदर भरकर गाय या भैंस को खिलाया जाता है। यह उपाय प्रजनन तंत्र को सक्रिय करने तथा मद (गर्मी) लाने में सहायक माना जाता है। यदि एक बार देने के बाद भी पशु में गर्मी के लक्षण दिखाई न दें, तो इसी विधि से एक बार पुनः जायफल का चूर्ण दिया जा सकता है। इसमें सावधानी आवश्यक है कि एक बार में एक जायफल से अधिक न दें, क्योंकि यह केवल पूरक उपाय है। यदि 10–15 दिनों तक मद न आए या पशु कमजोर अथवा बीमार दिखाई दे, तो अनिवार्य रूप से पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।
3. गर्मी (मद) में न आने वाले पशुओं में प्रजनन सक्रियता बढ़ाने के लिए एलोवेरा का जूस 5 चम्मच, गुड़ 2 चम्मच और गेहूँ का आटा 1 मुट्टी लेकर सभी को आपस में अच्छी तरह मिलाकर छोटे-छोटे पेड़े बनाए जाते हैं और इन्हें पशु को सुबह-शाम दिन में दो बार कम

से कम 3–5 दिनों तक खिलाया जाता है। यह घरेलू एवं आयुर्वेदिक उपाय हार्मोन संतुलन सुधारने और अंडाशयकी क्रियाशीलता बढ़ाकर पशु में मद के लक्षण लाने में सहायक माना जाता है, परंतु यदि इसके बाद भी गर्मी न आए तो पशु चिकित्सक से परामर्श आवश्यक है।

4. घृतकुमारी (एलोवेरा) की पत्तियों को पीसकर उनका रस निकाला जाता है और उससे एक कप रस पशु को पिलाया जाता है। एक दिन के अंतराल पर फिर से एक कप रस पिलाया जाता है। इस प्रकार एक सप्ताह में तीन बार, अर्थात् हर दूसरे दिन एलोवेरा का रस दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, बीमारी को दूर करने के विशेष उपाय के रूप में, एक सप्ताह तक एलोवेरा का रस पिलाने के बाद जायत्री (जावित्री) का चूर्ण केले के साथ खिलाने से अच्छे परिणाम मिलने की बात कही गई है। यह उपाय पारंपरिक एवं सहायक है, अतः यदि पशु में अपेक्षित सुधार न दिखे तो पशु चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।
5. पशु को करी-पत्ता प्रतिदिन एक बार नियमित रूप से एक माह तक खिलाने की सलाह दी जाती है। मात्रा पशु के अनुसार रखी जाती है – बकरी को प्रतिदिन 1 मुट्टी तथा गाय को प्रतिदिन 2 मुट्टी करी-पत्ता दिया जाता है। यह उपाय सामान्य स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और पोषण संतुलन को सहारा देने वाला माना जाता है, यदि समस्या बनी रहे तो पशु चिकित्सक से परामर्श आवश्यक है।

सही समय पर गर्भाधान

सफल गर्भाधान के लिए गर्भाधान का सही समय अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अंडोत्सर्ग से बहुत पहले या बहुत बाद में गर्भाधान करने पर निषेचन की संभावना कम हो जाती है। देशी गायों और भैंसों में AM-PM नियम अपनाना चाहिए : यदि पशु सुबह मद में आए तो उसी दिन शाम को और यदि शाम को मद में आए तो अगले दिन सुबह गर्भाधान करना उपयुक्त होता है। संकर और विदेशी नस्लों में मध्य से अंतिम मद अवस्था में गर्भाधान अधिक सफल होता है। विशेष परिस्थितियों में, संकर गायों में पहली कृत्रिम गर्भाधान के 12–24 घंटे बाद दोहरा गर्भाधान करने से गर्भधारण की संभावना बढ़ जाती है। मद समाप्त होने के बाद दिखाई देने वाला रक्त स्राव (मेटा-एस्ट्रसब्लीडिंग) यह संकेत देता है कि अंडोत्सर्ग हो चुका है, इसलिए इस समय गर्भाधान नहीं करना चाहिए। सही समय पर गर्भाधान अपना कर रिपीट ब्रीडिंग की समस्या काफी हद तक कम की जा सकती है।

स्वच्छता एवं प्रबंधन

रिपीट ब्रीडिंग की रोकथाम में स्वच्छता और उचित प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कृत्रिम गर्भाधान (AI) के समय पूरी तरह स्वच्छता बनाए रखना चाहिए, क्योंकि थोड़ी सीला पर वाही भी गर्भाशय संक्रमण का कारण बन सकती है। AI गन और अन्य उपकरण पूर्णतः कीटाणुरहित होने चाहिए और केवल प्रशिक्षित तकनीशियन द्वारा इस्तेमाल किए जाएँ। पशुशाला साफ, सूखी और हवादार होनी चाहिए, गंदगी और जल भराव से बचाव करें। पशुओं को हमेशा स्वच्छ पेयजल

उपलब्ध कराएं और फफूंद लगे या सड़े-गलेचारे का प्रयोग न करें। प्रबंधन के दृष्टिकोण से पशुओं को गर्मी, ठंड या तनाव से बचाना आवश्यक है- गर्मी के मौसम में छाया, पानी का छिड़काव और स्नान की व्यवस्था करें। सही स्वच्छता और प्रबंधन अपना कर गर्भाशय संक्रमण, तनाव और हार्मोनल असंतुलन को कम किया जा सकता है, जिससे रिपीट ब्रीडिंग की समस्या में उल्लेखनीय कमी आती है।

पशु चिकित्सकीय परामर्श

घरेलू आयुर्वेदिक और प्रबंधन उपायों के बावजूद यदि पशु गर्भधारण नहीं करता, असामान्य स्राव दिखाई देता है, बार-बार भ्रूण गिरता है, लंबे समय तक मद न आए या पशु कमजोर और एनीमिक प्रतीत हो, तो तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक है। पशु चिकित्सक द्वारा गर्भाशय और अंडाशय की जांच, अल्ट्रासाउंड या हार्मोनल प्रोफाइल मूल्यांकन किया जा सकता है। जांच के आधार पर ही एंटीबायोटिक, हार्मोन या अन्य उपचार दिया जाता है। समय पर चिकित्सकीय परामर्श लेने से न केवल रिपीट ब्रीडिंग की समस्या का समाधान होता है, बल्कि पशु के प्रजनन स्वास्थ्य और डेयरी उत्पादन में भी सुधार सुनिश्चित होता है।

रोकथाम के उपाय

रिपीट ब्रीडिंग की समस्या से बचाव उपचार से अधिक प्रभावी, सरल एवं आर्थिक होता है। उचितपोषण, सही समय पर गर्भाधान, स्वच्छता तथा वैज्ञानिक प्रबंधन अपना कर इस समस्या को काफी हद तक रोका जा सकता है। निम्नलिखित बातों को अपना ना पशुपालकों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

(क) अपनाने योग्य उपाय

- ✓ पशुओं को संतुलित आहार दें, जिसमें पर्याप्त ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज मिश्रण एवं विटामिन न हों।
- ✓ प्रसव के बाद पशु के गर्भाशय की समय-समय पर जांच कराएं।
- ✓ मद के लक्षणों की सही पहचान करें और AM-PM नियम के अनुसार समय पर गर्भाधान कराएं।
- ✓ कृत्रिम गर्भाधान केवल प्रशिक्षित तकनीशियन से और पूर्ण स्वच्छता में कराएं।
- ✓ पशुओं को साफ, सूखी, हवादार पशुशाला में रखें और तनाव से मुक्त वातावरण प्रदान करें।
- ✓ गर्मी के मौसम में हीट स्ट्रेस से बचाव हेतु छाया, पानी एवं शीतलन की व्यवस्था करें।
- ✓ समय-समय पर पशु चिकित्सक से स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श लेते रहें।

(ख) जिन बातों से बचें

- ✓ बिना जांच के बार-बार हार्मोन या दवाओं का प्रयोग न करें।
- ✓ फफूंद लगे, सड़े-गले या दूषित चारे का उपयोग न करें।
- ✓ अत्यधिक दुग्ध दोहन के कारण पशु को कमजोर न होने दें।

- ✓ मद समाप्त होने या मेटा-एस्ट्रस ब्लीडिंग के समय गर्भाधान न कराएं।
- ✓ गंदे वातावरण एवं पशुओं के साथ कठोर व्यवहार से बचें।

इन रोकथाम उपायों को नियमित रूप से अपनाने से रिपीट ब्रीडिंग की समस्या में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है तथा पशुओं की प्रजनन क्षमता और डेयरी उत्पादन दोनों में सुधार संभव है।

कब पशु चिकित्सक से संपर्क करें

रिपीट ब्रीडिंग की समस्या में समय पर पशु चिकित्सक से संपर्क करना अत्यंत आवश्यक होता है, ताकि बीमारी की वास्तविक वजह का पता लगाकर उचित उपचार किया जा सके। निम्नलिखित परिस्थितियों में पशुपालकों को बिना देर किए पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए।

- ✓ यदि 2–3 बार सही समय पर गर्भाधान कराने के बावजूद भी पशु गर्भधारण न करे।
- ✓ योनि से बदबूदार, पीला, हरा या गाढ़ा स्राव दिखाई दे, जो गर्भाशय संक्रमण का संकेत हो सकता है।
- ✓ बार–बार गर्भ गिरने की समस्या दिखाई दे।
- ✓ प्रसव के बाद लंबे समय तक मद न आए या मद अनियमित हो।
- ✓ पशु अत्यधिक दुबला, कमजोर, एनीमिक या लंबे समय से बीमार प्रतीत हो।
- ✓ गर्भाधान के बाद 60–90 दिनों तक गर्भ की पुष्टि न हो पाए।

निष्कर्ष

रिपीट ब्रीडिंग की समस्या का प्रभावी समाधान तभी संभव है जब पशु का समग्र एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाए। पशु चिकित्सक द्वारा शारीरिक जांच के साथ–साथ गर्भाशय एवं अंडाशय की जांच, तथा आवश्यकता पड़ने पर अल्ट्रासाउंड या प्रयोगशाला परीक्षण किए जाने चाहिए। जांच के निष्कर्षों के आधार पर ही उपयुक्त दवाइयों, हार्मोन या अन्य उपचारों का प्रयोग करना अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। समय पर पशु चिकित्सकीय परामर्श, संतुलित पोषण एवं उचित प्रबंधन अपनाने से न केवल रिपीट ब्रीडिंग की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है, बल्कि पशु के दीर्घकालीन प्रजनन स्वास्थ्य में सुधार के साथ–साथ डेयरी उत्पादन एवं किसान की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया जा सकता है।